PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD
Middle School Teacher Eligibility Test - 2018
17th Feb 2019 02:30PM

Topic:- Child Development & Pedagogy (CDP)

1) Which intelligence do navigators and sculptors have? मूर्तिकारों में किस प्रकार की बुद्धिमत्ता होती है?

1. Naturalist/ प्रकृतिवादी
2. Spatial/ स्थानिक
3. Interpersonal/ अंतर्वैयक्तिक
4. Bodily-kinesthetic/ शारीरिक-गतिक (बॉडली-कीनेस्थेटिक)

Correct Answer :-

- Spatial/ स्थानिक

2) _____ is the method that studies growth by observing and measuring the same individual for a variable period, during his/her growth / _____ वह विधि है जिसमें किसी व्यक्ति को उसकी वृद्धि के दौरान, एक परिवर्तनशील अवधि के लिए समान व्यक्ति का प्रेक्षण और मापन करते हुए अध्ययन किया जाता है।

1. Mixed Method/ मिश्रित विधि
2. Longitudinal Growth/ अनुदैर्ध्य वृद्धि
3. Cross Sectional Growth/ क्रॉस अनुभागीय विकास
4. Extended Method/ विस्तारित विधि

Correct Answer :-

- Longitudinal Growth/ अनुदैर्ध्य वृद्धि

3) Success is most crucial in school performance because it helps the child / विद्यालय के प्रदर्शन में, सफलता सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चे को निम्न में मदद मिलती है:

1. show his knowledge over other students / अन्य छात्रों के समक्ष अपने ज्ञान का प्रदर्शन
2. passing the examination / परीक्षा पास करना
3. winning Prize / पुरस्कार जीतना
4. feel more Confident about learning / अधिगम के संबंध में अधिक आत्मविश्वास महसूस करना

Correct Answer :-

- feel more Confident about learning / अधिगम के संबंध में अधिक आत्मविश्वास महसूस करना

4) Infants at an early stage are highly _____. / प्रारंभिक अवस्था में शिशु अत्यधिक _____ होते हैं।

1. Extravert / बहिर्मुखी
2. Unselfish / निस्वार्थ
3. Egocentric / स्वकेन्द्रित
4. Altruistic / परोपकारी

Correct Answer :-

- Egocentric / स्वकेन्द्रित

5) Conventionally, how many types of needs are explained in Maslow's theory? / पारंपरिक रूप से, मास्लो के सिद्धांत में कितने प्रकार की आवश्यकताओं को वर्णित किया गया है?

1. 2

2. 6

3. 5

4. 3

Correct Answer :-

- 5

6) An extrovert child would:/ एक बहिर्मुखी बच्चा कैसा होगा:

1. Tend to think things through inside your head./ आपके आंतरिक मष्तिष्क से चिंतन को प्रवृत करे।

2. rather just observe./ बल्कि सिर्फ निरीक्षण करे।

3. Think more and talk less./अधिक चिंतन और बातचीत कम करे।

4. Like to be in a fast-paced environment./तीव्र वातावरण में रहना पसंद करे।

Correct Answer :-

- Like to be in a fast-paced environment./तीव्र वातावरण में रहना पसंद करे।

7) The term personality has been derived from / 'व्यक्तित्व' (पर्सनालिटी) शब्द से निम्न से लिया गया है:

1. None of the above /उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. Greek / यूनानी

3. Latin / लैटिन

4. German / जर्मन

Correct Answer :-

- Latin / लैटिन

8) The assessment results from personality based projective tests are _____./ व्यक्तित्व आधारित अनुमानी परीक्षणों से मूल्यांकन के परिणाम _____ हैं।

1. Foolproof/ सरल

2. Controversial/ विवादास्पद

3. Futile / व्यर्थ

4. Objective / वस्तुनिष्ठ

Correct Answer :-

- Controversial/ विवादास्पद

9) The child worries almost everyday about getting hurt. This is because of _____. / बच्चे को चोट लगने के बारे में लगभग प्रतिदिन चिंता होती है। इसका कारण _____ है।

1. Autism / स्वलीनता (ऑटिज्म)

2. Attention Deficit Hyperactivity Disorder / ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार

3. Anxiety Disorder / चिंता विकार

4. Learning Disability / अधिगम अक्षमता

Correct Answer :-

- Anxiety Disorder / चिंता विकार

10) Which of the following is not an individual difference likely to affect learning? / निम्नलिखित में से कौन सा एक व्यक्तिगत अंतर नहीं है जो संभावत: अधिगम को प्रभावित कर सकता है?

1. Body mass / शरीर द्रव्यमान

2. Intelligence / बुद्धिमत्ता

3. Experience / अनुभव

4. Motivation / अभिप्रेरणा

Correct Answer :-

- Body mass / शरीर द्रव्यमान

11) Which of the following is a personality test created by Cattell? / निम्नलिखित में से कौन सा कैटल द्वारा तैयार किया गया व्यक्तित्व परीक्षण है?

1. Sentence Completion Test / वाक्य पूर्णता परीक्षण

2. NEO-FFI / एनईओ-एफएफआई

3. Sixteen Personality Factors Questionnaire / सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (सिक्सटीन पर्सनालिटी फैक्टर्स क्वैशननॉयर)

4. Locus of Control / नियंत्रण का ठिकाना (लोकस ऑफ़ कंट्रोल)

Correct Answer :-

- Sixteen Personality Factors Questionnaire / सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (सिक्सटीन पर्सनालिटी फैक्टर्स क्वैशननॉयर)

12) In an aptitude test, any estimate of a person's future possibilities of accomplishment is _____. / एक योग्यता परीक्षा में, किसी व्यक्ति के भविष्य की उपलब्धियों की संभावनाओं का कोई भी अनुमान _____ है।

1. a probability/ एक संभावना

2. a certainty/ एक निश्चितता

3. a question/ एक प्रश्न

4. an assumption/ एक धारणा

Correct Answer :-

- a probability/ एक संभावना

13) Moving from examples to generalization is: / उदाहरणों से सामान्यीकरण की ओर बढ़ना है:

1. Correlation / सह-संबंध

2. Inductive / आगमनात्मक

3. Incidental / आकस्मिक

4. Deductive / निगमनात्मक

Correct Answer :-

- Inductive / आगमनात्मक

14) Bandura believed in Reciprocal Determinism. This means that: / बंडुरा पारस्परिक नियतवाद में विश्वास करते थे। इसका अर्थ है:

1. The environment and one's behaviour cause each other. / परिवेश और किसी का व्यवहार एक-दूसरे के कारण बनता है।

2. One's environment causes one's behaviour. / किसी का परिवेश, किसी के व्यवहार के कारण बनता है।

3. One's environment remains unaffected by one's behaviour. / किसी के व्यवहार से किसी का परिवेश अप्रभावित रहता है।

4. One's behaviour is independent of one's environment. / किसी का व्यवहार, किसी के परिवेश से स्वतंत्र है।

Correct Answer :-

- The environment and one's behaviour cause each other. / परिवेश और किसी का व्यवहार एक-दूसरे के कारण बनता है।

15) Memory is measured by the method of / स्मृति को निम्न विधि से मापा जाता है:

1. Reproduction (recall) / पुनरुत्पादन (रिकॉल यानी याद करना)

2. Interview / साक्षात्कार

3. Observation / अवलोकन

4. Experimentation / प्रयोग

Correct Answer :-

- Reproduction (recall) / पुनरुत्पादन (रिकॉल यानी याद करना)

16) What is the term used to describe the negative attitudes that people have towards an individual based on their sex? / नकारात्मक दृष्टिकोणों का वर्णन करने के लिए किस पद का उपयोग किया जाता है, जिसे लोग उनके लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के लिए करते हैं?

1. Patriarchy / पितृसत्ता

2. Gender roles / जातिगत भूमिकाएँ

3. Sexism / लिंगभेद

4. Socialization / समाजीकरण

Correct Answer :-

- Sexism / लिंगभेद

17) What is the term that Piaget used to describe imitation carried out with parts of the body that one cannot see? / वह शब्द क्या है जिसका उपयोग पियाजे ने शरीर के उन हिस्सों के साथ की गई नकल का वर्णन करने के लिए किया है, जिन्हें कोई देख नहीं सकता है?

1. Invisible imitation / अदृश्य नकल

2. Spatial imitation / स्थानिक नकल

3. Visible imitation / दर्शनीय नकल

4. Model imitation / मॉडल नकल

Correct Answer :-

- Invisible imitation / अदृश्य नकल

18) One's heredity is determined at the time of _____. / किसी की आनुवंशिकता _____ के समय पर निर्धारित की जाती है।

1. Maturity / परिपक्वता

2. Conception / गर्भधारण

3. Growth / विकास

4. Birth / जन्म

Correct Answer :-

- Conception / गर्भधारण

19) Counselling involves _____ / परामर्श में _____ शामिल होता है।

1. consultation and interchange of opinions between counsellor and the individual / परामर्शदाता और व्यक्ति के बीच विचारों का आदान-प्रदान और परामर्श
2. advice from counsellor to the individual only / केवल व्यक्ति को परामर्शदाता से सलाह लेना
3. problem sharing by the individual with the counselor only / केवल परामर्शदाता के साथ व्यक्ति द्वारा समस्या साझा करना
4. schools identifying issues with children with needs / जरूरत वाले बच्चों के साथ मुद्दों की पहचान करने वाले विद्यालय

Correct Answer :-

- consultation and interchange of opinions between counsellor and the individual / परामर्शदाता और व्यक्ति के बीच विचारों का आदान-प्रदान और परामर्श

20) Vocational training to persons with locomotor disability is more related to_____domain. / लोकोमोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों का व्यावसायिक प्रशिक्षण _____ डोमेन से अधिक संबंधित है।

1. cognitive / संज्ञानात्मक
2. none of these / इनमें से कोई नहीं
3. affective / प्रभावी
4. psychomotor / साइकोमोटर

Correct Answer :-

- psychomotor / साइकोमोटर

21) Social learning theory was proposed by: / सामाजिक अधिगम सिद्धांत इनके द्वारा प्रस्तावित किया गया था:

1. Freud / फ्रायड
2. Bandura / बंडूरा
3. Skinner / स्किनर
4. Pavlov / पावलोव

Correct Answer :-

- Bandura / बंडूरा

22) Socially immature students are known as _____ students. / सामाजिक रूप से अपरिपक्व छात्रों को _____ छात्रों के रूप में जाना जाता है।

1. Dependent / निर्भर
2. Alienated / अलग-थलग
3. Phantom / आभासी
4. Social / सामाजिक

Correct Answer :-

- Dependent / निर्भर

23) Social knowledge is obtained through _____ from other people. / अन्य लोगों से _____ के माध्यम से सामाजिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

1. Feedback / प्रतिक्रिया (फीडबैक)
2. Discouragement / हतोत्साहन
3. Encouragement / प्रोत्साहन

4. Logic / तर्क (लॉजिक)

Correct Answer :-

- Feedback / प्रतिक्रिया (फीडबैक)

24) According to Gardner, spiritual intelligence is / गार्डनर के अनुसार, आध्यात्मिक बौद्धिकता है:

1. the ability to perform transformations on one's initial perceptions / किसी की प्रारंभिक धारणाओं में परिवर्तन करने की क्षमता
2. the ability to contemplate big questions about the meaning of life / जीवन के उद्देश्य के संबंध में जटिल समस्याओं पर विचार करने की क्षमता
3. the ability to make distinctions in the natural world / प्राकृतिक दुनिया में विभेद करने की क्षमता
4. the knowledge of one's own strengths, weaknesses, desires and intelligence / अपनी स्वयं की शक्तियों, कमजोरियों, इच्छाओं और बुद्धिमता का ज्ञान

Correct Answer :-

- the ability to contemplate big questions about the meaning of life / जीवन के उद्देश्य के संबंध में जटिल समस्याओं पर विचार करने की क्षमता

25) Formative assessment is: / रचनात्मक मूल्यांकन है:

1. A process that does not involve value judgement / एक प्रक्रिया जिसमें आदर्श धारणा (वैल्यू जजमेंट) शामिल नहीं है।
2. Performed by evaluating student learning by comparing with a benchmark / मानदण्ड के साथ तुलना कर छात्र अधिगम के मूल्यांकन द्वारा क्रियान्वित किया जाता है।
3. Used for rating the learner through high-point valuation / उच्च-कोटि मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षार्थी (लर्नर) की योग्यता निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
4. Less beneficial for the teacher as it does not help to know the weaknesses and strengths of a learner / शिक्षक के लिए अल्पतर लाभप्रद है क्योंकि यह शिक्षार्थी (लर्नर) के गुण और दोष को जानने में मदद नहीं करता है।

Correct Answer :-

- A process that does not involve value judgement / एक प्रक्रिया जिसमें आदर्श धारणा (वैल्यू जजमेंट) शामिल नहीं है।

26) The role of the teacher in a progressive education is that of a / एक प्रगतिशील शिक्षा में शिक्षक की एक भूमिका है:

1. Disciplinarian / अनुशासक
2. Instructor / प्रशिक्षक
3. Guide / मार्गदर्शक
4. Lesson planner / पाठ योजनाकार

Correct Answer :-

- Guide / मार्गदर्शक

27) According to research, peer-assessment is valuable because / शोध के अनुसार, सहकर्मी-मूल्यांकन मूल्यवान है क्योंकि

1. it encourages competition among the students / यह छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है।
2. pupils may accept feedback from one another on their work / छात्र अपने काम पर एक दूसरे से प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं।
3. students know their rank in the class /छात्र कक्षा में अपनी रैंक जानते हैं।
4. it reduces workload for teachers to assess the students / यह छात्रों के मूल्यांकन के लिए शिक्षकों के कार्य बोझ को कम करता है।

Correct Answer :-

- pupils may accept feedback from one another on their work / छात्र अपने काम पर एक दूसरे से प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं।

28) According to Fabiano, Pelham, Manos, Gnagy et al. (2004) an effective means of reducing disruptive behaviors including aggressiveness, destruction of properties and non-compliance in the classroom is?

/ फैबियानो, पेलहम, मानोस, गैने एट अल (2004) के अनुसार, कक्षा में आक्रामकता, गुणधर्मों का विनाश और गैर-अनुपालन सहित विघटनकारी व्यवहार को कम करने का एक प्रभावी साधन निम्न है?

1. Time –out (TO) from positive reinforcement / सकारात्मक सुदृढीकरण से टाइम-आउट (टीओ)

2. Time –out (TO) in the classroom / कक्षा में टाइम-आउट (टीओ)

3. Corporal punishment / शारीरिक दंड

4. Detention / निरोध

Correct Answer :-

- Time –out (TO) from positive reinforcement / सकारात्मक सुदृढीकरण से टाइम-आउट (टीओ)

29) Sometimes, children are dissimilar to both the parents. This is because of the Law of _____. / कभी-कभी बच्चे, माता-पिता दोनों से अलग होते हैं। ऐसा _____ के नियम के कारण होता है।

1. Segregation / पृथक्करण

2. Variation / विविधता

3. Dominance / प्रभुत्व

4. Regression / प्रतीपगमन

Correct Answer :-

- Variation / विविधता

30) In Sternberg's theory of intelligence, which of the following steps involve finding a solution to the problem? / स्टेनबर्ग के बुद्धिमत्ता के सिद्धांत में, निम्नलिखित में से किस चरण में समस्या का समाधान ज्ञात करना शामिल है?

1. Application / अनुप्रयोग (एप्लीकेशन)

2. Mapping / प्रतिचित्रण (मैपिंग)

3. Encoding / संकेतन (इनकोडिंग)

4. Response / प्रतिक्रिया (रिस्पॉन्स)

Correct Answer :-

- Response / प्रतिक्रिया (रिस्पॉन्स)

Topic:- General Hindi (L1GH)

1) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कहाँ से बस चलने के बाद रास्ते के दृश्य बदलने लगे?

1. रानीखेत

2. हिमालय

3. कौसानी

4. कोसी

Correct Answer :-

- कोसी

2) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्पूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: गाँधी जी को कौसानी में किस देश जैसा अहसास होता था?

1. दक्षिण अफ्रीका

2. ग्रेट ब्रिटेन

3. स्विट्जरलैंड

4. रूस

Correct Answer :-

- स्विट्जरलैंड

3) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्पूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: गाँधी जी ने कहाँ पर 'अनासक्ति योग' लिखा था?

1. गुजरात

2. कौसानी

3. कश्मीर

4. स्विट्जरलैंड

Correct Answer :-

- कौसानी

4) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कल्यूर की रंग-बिरंगी घाटी में कौन वास करते होंगे?

1. मनुष्य और पशु

2. कोई नहीं

3. देवी-देवता

4. किन्नर और यक्ष

Correct Answer :-

- किन्नर और यक्ष

5) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: "बरफ। वह देखो।" चिल्लाकर किसने कहा?

1. शुक्ल जी

2. सब ने

3. पाठक ने

4. लेखक ने

Correct Answer :-

- लेखक ने

6) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर

असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: 'कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है' लेखक से ऐसा किसने कहा था?

1. सहयोगी ने

2. शुक्ल जी ने

3. किसी ने नहीं

4. पत्नी ने

Correct Answer :-

- सहयोगी ने

---

7) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: नदी को कहाँ लपेटने की बात लेखक करता है?

1. गले में

2. कलाई में

3. किसी में नहीं

4. झोले में

Correct Answer :-

- कलाई में

---

8) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख,

आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: अपार सौंदर्य कहाँ बिखरा हुआ था?

1. पीछे की घाटी में

2. डाकबंगला में

3. सामने की घाटी में

4. पहाड़ी में

Correct Answer :-

- सामने की घाटी में

9) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कहाँ की घाटी बेहद सुंदर है?

1. सोमेश्वर

2. विंध्याचल

3. कौसानी

4. रामेश्वर

Correct Answer :-

- सोमेश्वर

10) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: थकावट के बाद रास्ते का सुहावनापन लेखक को क्या बना रहा था?

1. मोहित

2. तंद्रालस

3. उत्तेजक

4. विचारमग्न

Correct Answer :-

- तंद्रालस

11) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: घाटी के उस पर स्थित क्या है?

1. नगाधिराज हिमालय

2. पर्वतमाला

3. सोमेश्वर घाटी

4. कौसानी

Correct Answer :-

- नगाधिराज हिमालय

12) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: लेखक के अधैर्य, असंतोष और क्षोभ पर किसकी प्रतिक्रिया लेखक को पता नहीं चली?

1. गाँधी जी

2. शुक्ल जी

3. भारती जी

4. सभी की

Correct Answer :-

- शुक्ल जी

13) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: लेखक को नदियों की आकृति कैसी लगी?

1. सर्पाकार
2. जलेबी जैसी
3. बेले की लड़ियों-सी
4. झरने-जैसी

Correct Answer :-

- बेले की लड़ियों-सी

14) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: लेखक ने अपना संशय किसके साथ व्यक्त किया?

1. वर्मा जी
2. गाँधी जी
3. शर्मा जी
4. शुक्ल जी

Correct Answer :-

- शुक्ल जी

15) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं 'अनासक्ति योग' लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसनी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियाँ-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँख, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कौसानी घाटी के निष्कलंक सौंदर्य को देखकर लेखक के मन में क्या ख़याल आया?

1. इनमें से कोई नहीं
2. जी भर निहारने का
3. सौंदर्यपान करने का
4. जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ने का

Correct Answer :-

- जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ने का

---

16) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: इस कविता का शीर्षक उत्साह क्यों है?

1. उपर्युक्त सभी
2. केवल वर्षा का हमारी संस्कृति में अहम स्थान है।
3. केवल गर्मी से बेहाल लोगों को मानसून की प्रतीक्षा रहती है।
4. केवल वर्षा पर हमारी खेती निर्भर है।

Correct Answer :-

- उपर्युक्त सभी

---

17) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: इस कविता में कवि बादलों से किस चीज़ का आह्वान करता है?

1. जाने का
2. आने का
3. गरजने का
4. बरसने का

Correct Answer :-

- गरजने का

18) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: इस कविता में ऐसे कौन-से दो शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है?

1. गरज गरज, घनघोर
2. इनमें से कोई नहीं
3. बादल, गरजे घोर
4. विद्युत छवि, वज्र

Correct Answer :-

- विद्युत छवि, वज्र

19) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि बादलों से किस चीज़ की रचना करने को कहता है?

1. किसी नई कविता की
2. किसी नये बादल की
3. किसी नये आकाश की
4. नई नदी की

Correct Answer :-

- किसी नई कविता की

---

20) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि कहता है कि वे पूरे आसमान को घेर कर घोर गर्जना करें।

1. इनमें से कोई नहीं
2. यह कथन असत्य है
3. यह कथन सत्य है
4. यह कथन विपरीत है

Correct Answer :-

- यह कथन सत्य है

---

21) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: बादलों से किसी नई कविता की रचना करने और उस रचना से सबको भर देने को कौन कह रहा है?

1. किसान
2. मेघ
3. कवि
4. बच्चे

Correct Answer :-

- कवि

22) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: काले-काले घुंघराले बादलों में किसकी कल्पना समाई हुई है?

1. किसी युवती की
2. किसी बालक की
3. किसी देवी की
4. किसी नायिका की

Correct Answer :-

- किसी बालक की

23) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: 'आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन'-से क्या तात्पर्य है?

1. कई दिशाओं से बादल घिर आए
2. इनमें से कोई नहीं
3. अजनबी कोई गया
4. अज्ञात दिशा कोई आया

Correct Answer :-

- कई दिशाओं से बादल घिर आए

---

24) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: किसके हृदय में किसी कवि की तरह असीम ऊर्जा भरी हुई है?

1. कवि के
2. किसान के
3. पाठक के
4. बादल के

Correct Answer :-

- बादल के

25) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: दृश्य में यदि ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, तो वह क्या कहलाता है?

1. नाद सौंदर्य

2. अलंकार

3. ध्वनि

4. रूपक

Correct Answer :-

- नाद सौंदर्य

26) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

1. कोई अनगढ़ बालक

2. कोई अनजान दिशा से आया पथिक

3. कोई नवीन रचना

4. उपर्युक्त सभी

Correct Answer :-

- उपर्युक्त सभी

27) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कौन-सा शब्द 'उत्साह' का पर्यायवाची नहीं है?

1. उमंग
2. आवेग
3. जोश
4. क्रोध

Correct Answer :-

- क्रोध

28) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

1. क्योंकि केवल रिमझिम या फुहार से काम नहीं चलेगा
2. पानी की जरूरत नहीं

3. गरजने की आवश्यकता है

4. गरजना जरूरी है, बरसना नहीं

Correct Answer :-

- क्योंकि केवल रिमझिम या फुहार से काम नहीं चलेगा

29) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि की बादलों की रचना में क्या देखता है?

1. एक सरलता

2. एक मधुरता

3. एक तरलता

4. एक नवीनता

Correct Answer :-

- एक नवीनता

30) बादल, गरजो!--

घेर घेर घोर गगन, धाराधर जो!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो:--

बादल, गरजो!

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन,

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आये अज्ञात दिशा से अनन्त के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:--

बादल, गरजो!

दिए गए पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: विश्व के निदाघ के सकल जन किसे कहा गया है?

1. इनमें से किसी को नहीं

2. बारिश से बेहाल लोगों को

3. सर्दी से बेहाल लोगों को

4. गर्मी से बेहाल जनों को

Correct Answer :-

- गर्मी से बेहाल जनों को

Topic:- General Sanskrit(L2GS)

1) विज्ञानम् अस्य वर्णवियोजनम् -

1. व्+इ+ज्ञा+न्+म्

2. व्+इ+ज्+ञ्+न्+आ+न्+अ+म्

3. इ+व्+ज्+न्+अ+म्

4. विज्+णा+नम्

Correct Answer :-

- व्+इ+ज्+ञ्+न्+आ+न्+अ+म्

2)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

एषा गौः । गोः धेनुः इति नामान्तरं विद्यते । अस्याः चत्वारः पादाः सन्ति । द्वे शृङ्गे वर्तेते । एकं लम्बं पुच्छं च विद्यते । इयं प्रकृत्या आकारेण च परमा साध्वी । अस्याः वत्सः समीपे तिष्ठति । प्रत्यहं गोपालः द्विवारं गां क्षीरं दोग्धि । प्रातः सायं च द्वौ गोदोहनकालौ भवतः । गोपः वामेन करेण पात्रं धृत्वा दक्षिणेन हस्तेन दुग्धं दोग्धि । प्रथमं वत्सः स्तन्यं पिबति पश्चात् पयः गां दोग्धि गोपालः । गोदोहनानन्तरं सः वत्सः पुनः पयः पिबति ।

गावः प्रीत्या हरितानि तृणानि, पिण्याकं, कार्पासबीजानि, बुसं च खादन्ति । ताः मधुरं क्षीरं वितरन्ति च । धेनूनां क्षीरं सर्वेषां पथ्यं भवति । क्षीरस्य आतञ्चनात् दधि भवति । दधिमथनात् नवनीतं प्राप्यते । तप्तेन नवनीतेन घृतं सम्पद्यते । घृतेन वर्धते बुद्धिः । क्षीराद् दधि, तक्रं, नवनीतं, घृतं, च मनुष्याणाम् उपयुक्तानि वस्तूनि सन्ति । तानि भोजनाय उपयुज्यन्ते । तानि विना भोजनं रसमयं न भवति । गोमयं, गोमूत्रं, घृतं, दधि, क्षीरं, च पञ्चगव्यमिति प्रख्यातम् ।

अनेन बुद्धिः वर्धते ?

1. क्षीरेण
2. नवनीतेन
3. गोमयेन
4. घृतेन

Correct Answer :-

. घृतेन

3)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

एषा गौः । गोः धेनुः इति नामान्तरं विद्यते । अस्याः चत्वारः पादाः सन्ति । द्वे शृङ्गे वर्तेते । एकं लम्बं पुच्छं च विद्यते । इयं प्रकृत्या आकारेण च परमा साध्वी । अस्याः वत्सः समीपे तिष्ठति । प्रत्यहं गोपालः द्विवारं गां क्षीरं दोग्धि । प्रातः सायं च द्वौ गोदोहनकालौ भवतः । गोपः वामेन करेण पात्रं धृत्वा दक्षिणेन हस्तेन दुग्धं दोग्धि । प्रथमं वत्सः स्तन्यं पिबति पश्चात् पयः गां दोग्धि गोपालः । गोदोहनानन्तरं सः वत्सः पुनः पयः पिबति ।

गावः प्रीत्या हरितानि तृणानि, पिण्याकं, कार्पासबीजानि, बुसं च खादन्ति । ताः मधुरं क्षीरं वितरन्ति च । धेनूनां क्षीरं सर्वेषां पथ्यं भवति । क्षीरस्य आतञ्चनात् दधि भवति । दधिमथनात् नवनीतं प्राप्यते । तप्तेन नवनीतेन घृतं सम्पद्यते । घृतेन वर्धते बुद्धिः । क्षीराद् दधि, तक्रं, नवनीतं, घृतं, च मनुष्याणाम् उपयुक्तानि वस्तूनि सन्ति । तानि भोजनाय उपयुज्यन्ते । तानि विना भोजनं रसमयं न भवति । गोमयं, गोमूत्रं, घृतं, दधि, क्षीरं, च पञ्चगव्यमिति प्रख्यातम् ।

तप्तं नवनीतं किं जनयति ?

1. क्षीरं
2. तक्रम्
3. घृतं
4. नवनीतं

Correct Answer :-

. घृतं

4)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अन्नेन विना मानवः न जीवति । अन्नं तु कृषकस्य परिश्रमात् सूर्यवृष्टिमृदां कारणादुत्पद्यते । कृषकः अहर्निशं क्षेत्रे धान्यार्थं परिश्रमं करोति । सः आतपवृष्ट्यादीन् कष्टान् अविगणय्य लोकाय आहारम् उत्पादयति । सः तपस्वीव एकाग्रतया सन्तोषेण च स्वकार्यं करोति ।

सामान्यतः कृषकः उटजे वसति । तत्र सः स्वभार्यापुत्रैः सह निवसति । उटजे सः कुक्कुटं, श्वानं, धेनुं बलीवर्दौ च पालयति । प्रभाते कुक्कुटः शब्दं करोति कृषकं च जागरयति । सारमेयः तस्य उटजं चोरेभ्यः रक्षति । धेनुः तस्मै तत्कुटुम्बाय च दुग्धं ददाति । बलीवर्दौ क्षेत्रे हलं कर्षतः तस्य साहाय्यं च कुरुतः । एवं सः कुटुम्बेन सह जन्तून् अपि पालयति ।

कृषकः धान्येन सह कदलीपादपं, नारिकेलवृक्षम्, पूगवृक्षं पुष्पाणि च वर्धयति । कदलीपत्रं भोजनार्थम् कदलीफलं च देवाय उपयुज्यते । नारिकेलफलं देवाय, नारिकेलतैलं शिरसे च उपयुज्यते । पूगफलं ताम्बूले उपयुज्यते । नाना पुष्पाणि देवपूजायै स्त्रीणां सौन्दर्यवर्धनार्थं मूर्ध्नि च धार्यते । एवं कृषकः स्वकार्येण सर्वान् अपि जनान् उपकरोति ।

कृषकः एतेषु किं न वर्धयति ?

1. कल्पवृक्षं
2. कदलीपादपं
3. नारिकेलवृक्षं
4. पूगवृक्षं

Correct Answer :-

. कल्पवृक्षं

5)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

एषा गौः । गोः धेनुः इति नामान्तरं विद्यते । अस्याः चत्वारः पादाः सन्ति । द्वे शृङ्गे वर्तेते । एकं लम्बं पुच्छं च विद्यते । इयं प्रकृत्या आकारेण च परमा साध्वी । अस्याः वत्सः समीपे तिष्ठति । प्रत्यहं गोपालः द्विवारं गां क्षीरं दोग्धि । प्रातः सायं च द्वौ गोदोहनकालौ भवतः । गोपः वामेन करेण पात्रं धृत्वा दक्षिणेन हस्तेन दुग्धं दोग्धि । प्रथमं वत्सः स्तन्यं पिबति पश्चात् पयः गां दोग्धि गोपालः । गोदोहनानन्तरं सः वत्सः पुनः पयः पिबति ।

गावः प्रीत्या हरितानि तृणानि, पिण्याकं, कार्पासबीजानि, बुसं च खादन्ति । ताः मधुरं क्षीरं वितरन्ति च । धेनूनां क्षीरं सर्वेषां पथ्यं भवति । क्षीरस्य आतञ्चनात् दधि भवति । दधिमथनात् नवनीतं प्राप्यते । तप्तेन नवनीतेन घृतं सम्पद्यते । घृतेन वर्धते बुद्धिः । क्षीराद् दधि, तक्रं, नवनीतं, घृतं, च मनुष्याणाम् उपयुक्तानि वस्तूनि सन्ति । तानि भोजनाय उपयुज्यन्ते । तानि विना भोजनं रसमयं न भवति । गोमयं, गोमूत्रं, घृतं, दधि, क्षीरं, च पञ्चगव्यमिति प्रख्यातम् ।

गोः कति पादाः सन्ति ?

1. षट्
2. पञ्च
3. चत्वारः
4. त्रयः

Correct Answer :-

. चत्वारः

6) हकारस्य वर्णोत्पत्तिस्थानम् -

1. मूर्धा
2. तालु

3. नासिका

4. कण्ठः

Correct Answer :-

- कण्ठः

7)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति।
काकोऽपि किं न कुरूते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपुः पृथिव्याम्।
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ॥

पृथिव्याम् एतादृशः रिपुः नास्ति ।

1. वैराग्यतुल्यः

2. मदतुल्यः

3. ऐश्वर्यतुल्यः

4. लोभतुल्यः

Correct Answer :-

- लोभतुल्यः

8)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अन्नेन विना मानवः न जीवति । अन्नं तु कृषकस्य परिश्रमात् सूर्यवृष्टिमृदां कारणादुत्पद्यते । कृषकः अहर्निशं क्षेत्रे धान्यार्थं परिश्रमं करोति । सः आतपवृष्ट्यादीन् कष्टान् अविगणय्य लोकाय आहारम् उत्पादयति । सः तपस्वीव एकाग्रतया सन्तोषेण च स्वकार्यं करोति ।

सामान्यतः कृषकः उटजे वसति । तत्र सः स्वभार्यापुत्रैः सह निवसति । उटजे सः कुक्कुटं, श्वानं, धेनुं बलीवर्दौ च पालयति । प्रभाते कुक्कुटः शब्दं करोति कृषकं च जागरयति । सारमेयः तस्य उटजं चोरेभ्यः रक्षति । धेनुः तस्मै तत्कुटुम्बाय च दुग्धं ददाति । बलीवर्दौ क्षेत्रे हलं कर्षतः तस्य साहाय्यं च कुरुतः । एवं सः कुटुम्बेन सह जन्तून् अपि पालयति ।

कृषकः धान्येन सह कदलीपादपं, नारिकेलवृक्षम्, पूगवृक्षं पुष्पाणि च वर्धयति । कदलीपत्रं भोजनार्थम् कदलीफलं च देवाय उपयुज्यते । नारिकेलफलं देवाय, नारिकेलतैलं शिरसे च उपयुज्यते । पूगफलं ताम्बूले उपयुज्यते । नाना पुष्पाणि देवपूजायै स्त्रीणां सौन्दर्यवर्धनार्थं मूर्ध्नि च धार्यते । एवं कृषकः स्वकार्येण सर्वान् अपि जनान् उपकरोति ।

प्रभाते कः जागरयति ?

1. सूर्यः
2. कुक्कुटः
3. कुक्कुरः
4. बिडालः

Correct Answer :-

. कुक्कुटः

---

9) महा + ऋषिः अस्य शुद्धः संयोगः अयमस्ति

1. महरुषिः
2. महारुषिः
3. महर्षिः

4. माहारुषिः

Correct Answer :-

. महर्षिः

10)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

संरोहति अग्निना दग्धं वनं परशुना हतम् |
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ||
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानि: पदे पदे |
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते ||

एतत् अग्निना दग्धमपि संरोहति ।

1. वनम्
2. परशुः
3. वाक्
4. क्षतम्

Correct Answer :-

. वनम्

11)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

संरोहति अग्निना दग्धं वनं परशुना हतम् |
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ||
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानि: पदे पदे |
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते ||

एषः मुद्गरैरभिताड्यते ।

1. सज्जनः
2. दुर्जनः
3. पावकः
4. शिरः

Correct Answer :-

- पावकः

12)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अन्नेन विना मानवः न जीवति । अन्नं तु कृषकस्य परिश्रमात् सूर्यवृष्टिमृदां कारणादुत्पद्यते । कृषकः अहर्निशं क्षेत्रे धान्यार्थं परिश्रमं करोति । सः आतपवृष्ट्यादीन् कष्टान् अविगणय्य लोकाय आहारम् उत्पादयति । सः तपस्वीव एकाग्रतया सन्तोषेण च स्वकार्यं करोति ।

सामान्यतः कृषकः उटजे वसति । तत्र सः स्वभार्यापुत्रैः सह निवसति । उटजे सः कुक्कुटं, श्वानं, धेनुं बलीवर्दौ च पालयति । प्रभाते कुक्कुटः शब्दं करोति कृषकं च जागरयति । सारमेयः तस्य उटजं चोरेभ्यः रक्षति । धेनुः तस्मै तत्कुटुम्बाय च दुग्धं ददाति । बलीवर्दौ क्षेत्रे हलं कर्षतः तस्य साहाय्यं च कुरुतः । एवं सः कुटुम्बेन सह जन्तून् अपि पालयति ।

कृषकः धान्येन सह कदलीपादपं, नारिकेलवृक्षम्, पूगवृक्षं पुष्पाणि च वर्धयति । कदलीपत्रं भोजनार्थम् कदलीफलं च देवाय उपयुज्यते । नारिकेलफलं देवाय, नारिकेलतैलं शिरसे च उपयुज्यते । पूगफलं ताम्बूले उपयुज्यते । नाना पुष्पाणि देवपूजायै स्त्रीणां सौन्दर्यवर्धनार्थं मूर्ध्नि च धार्यते । एवं कृषकः स्वकार्येण सर्वान् अपि जनान् उपकरोति ।

कः जनान् उपकरोति ?

1. चालकः
2. कृषकः
3. स्वर्णकारः
4. कुम्भकारः

Correct Answer :-

. कृषकः

13)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

एषा गौः । गोः धेनुः इति नामान्तरं विद्यते । अस्याः चत्वारः पादाः सन्ति । द्वे शृङ्गे वर्तेते । एकं लम्बं पुच्छं च विद्यते । इयं प्रकृत्या आकारेण च परमा साध्वी । अस्याः वत्सः समीपे तिष्ठति । प्रत्यहं गोपालः द्विवारं गां क्षीरं दोग्धि । प्रातः सायं च द्वौ गोदोहनकालौ भवतः । गोपः वामेन करेण पात्रं धृत्वा दक्षिणेन हस्तेन दुग्धं दोग्धि । प्रथमं वत्सः स्तन्यं पिबति पश्चात् पयः गां दोग्धि गोपालः । गोदोहनानन्तरं सः वत्सः पुनः पयः पिबति ।

गावः प्रीत्या हरितानि तृणानि, पिण्याकं, कार्पासबीजानि, बुसं च खादन्ति । ताः मधुरं क्षीरं वितरन्ति च । धेनूनां क्षीरं सर्वेषां पथ्यं भवति । क्षीरस्य आतञ्चनात् दधि भवति । दधिमथनात् नवनीतं प्राप्यते । तप्तेन नवनीतेन घृतं सम्पद्यते । घृतेन वर्धते बुद्धिः । क्षीराद् दधि, तक्रं, नवनीतं, घृतं, च मनुष्याणाम् उपयुक्तानि वस्तूनि सन्ति । तानि भोजनाय उपयुज्यन्ते । तानि विना भोजनं रसमयं न भवति । गोमयं, गोमूत्रं, घृतं, दधि, क्षीरं, च पञ्चगव्यमिति प्रख्यातम् ।

क्षीरेण दधि कथं भवति ?

1. मथनात्
2. शीतलीकरणात्
3. तापनात्
4. आतञ्चनात्

Correct Answer :-

. आतञ्चनात्

14)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

संरोहति अग्निना दग्धं वनं परशुना हतम् |
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ||
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानि: पदे पदे |
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते ||

'दुर्जनसंसर्गात्' अत्रायं समासः ।

1. अव्ययीभाव:
2. तत्पुरुष:
3. बहुव्रीहि:
4. द्वन्द्व:

Correct Answer :-

. तत्पुरुष:

15) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

संरोहति अग्निना दग्धं वनं परशुना हतम् |
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ||
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानि: पदे पदे |
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते ||

दुर्जनसंसर्गात् एतत् भवति ।

1. अवमानम्
2. वञ्चना

3. मानहानिः

4. मोहः

Correct Answer :-

- मानहानिः

16) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहव: स तु जीवति |
काकोऽपि किं न कुरूते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ||

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपु: पृथिव्याम् |
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ||

'आभरणम्' पदस्य पर्यायपदमिदम् ।

1. स्वर्णम्

2. धनम्

3. अङ्गम्

4. विभूषणम्

Correct Answer :-

- विभूषणम्

17) मृच्छकटिकस्य नायिका का?

1. वासवदत्ता

2. उर्वशी

3. रत्नावली

4. वसन्तसेना

Correct Answer :-

. वासवदत्ता

18) निर्जनः इत्यस्य विग्रहवाक्यमनिस्ति इदम् -

1. निर्गताः जनाः यस्मात् तत्

2. निर्गताः जनाः यस्मात् सः

3. निर्गताः जनाः येन तत्

4. निर्गताः जनाः यस्मिन् तत्

Correct Answer :-

. निर्गताः जनाः यस्मात् सः

19) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

संरोहति अग्निना दग्धं वनं परशुना हतम् |
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ||
अहो दुर्जनसंसर्गात् मानहानि: पदे पदे |
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिताड्यते ||

'वाक्' पदस्य अयं लिङ्गः ।

1. नपुंसकलिङ्गः

2. पुंलिङ्गः

3. त्रिलिङ्गः

4. स्त्रीलिङ्गः

Correct Answer :-

. स्त्रीलिङ्गः

20)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

एषा गौः । गोः धेनुः इति नामान्तरं विद्यते । अस्याः चत्वारः पादाः सन्ति । द्वे शृङ्गे वर्तेते । एकं लम्बं पुच्छं च विद्यते । इयं प्रकृत्या आकारेण च परमा साध्वी । अस्याः वत्सः समीपे तिष्ठति । प्रत्यहं गोपालः द्विवारं गां क्षीरं दोग्धि । प्रातः सायं च द्वौ गोदोहनकालौ भवतः । गोपः वामेन करेण पात्रं धृत्वा दक्षिणेन हस्तेन दुग्धं दोग्धि । प्रथमं वत्सः स्तन्यं पिबति पश्चात् पयः गां दोग्धि गोपालः । गोदोहनानन्तरं सः वत्सः पुनः पयः पिबति ।

गावः प्रीत्या हरितानि तृणानि, पिण्याकं, कार्पासबीजानि, बुसं च खादन्ति । ताः मधुरं क्षीरं वितरन्ति च । धेनूनां क्षीरं सर्वेषां पथ्यं भवति । क्षीरस्य आतञ्चनात् दधि भवति । दधिमथनात् नवनीतं प्राप्यते । तप्तेन नवनीतेन घृतं सम्पद्यते । घृतेन वर्धते बुद्धिः । क्षीराद् दधि, तक्रं, नवनीतं, घृतं, च मनुष्याणाम् उपयुक्तानि वस्तूनि सन्ति । तानि भोजनाय उपयुज्यन्ते । तानि विना भोजनं रसमयं न भवति । गोमयं, गोमूत्रं, घृतं, दधि, क्षीरं, च पञ्चगव्यमिति प्रख्यातम् ।

वत्सः कुत्र अस्ति ?

1. मध्ये
2. दूरे
3. समीपे
4. नान्तिके

Correct Answer :-

. समीपे

21)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहव: स तु जीवति |
काकोऽपि किं न कुरूते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ||

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपु: पृथिव्याम् |
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ||

'रिपुः' पदस्य विरुद्धपदमिदम् ।

1. मित्रः
2. क्रोधी
3. शत्रुः
4. मित्रम्

Correct Answer :-

- मित्रम्

22) अधोदत्तेषु विकल्पेषु कः विकल्पः अशुद्धः ?

1. निर्मक्षिकम्
2. निर्धनम्
3. निर्मितिः
4. निर्मोहः

Correct Answer :-

- निर्मितिः

23)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहव: स तु जीवति |
काकोऽपि किं न कुरूते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ||

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपु: पृथिव्याम् |
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ||

अनेन तुल्यः निधिः नास्ति ।

1. ज्ञानेन
2. श्रमेण
3. कर्मणा
4. दानेन

Correct Answer :-

- दानेन

24)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अन्नेन विना मानवः न जीवति । अन्नं तु कृषकस्य परिश्रमात् सूर्यवृष्टिमृदां कारणादुत्पद्यते । कृषकः अहर्निशं क्षेत्रे धान्यार्थं परिश्रमं करोति । सः आतपवृष्ट्यादीन् कष्टान् अविगणय्य लोकाय आहारम् उत्पादयति । सः तपस्वीव एकाग्रतया सन्तोषेण च स्वकार्यं करोति ।

सामान्यतः कृषकः उटजे वसति । तत्र सः स्वभार्यापुत्रैः सह निवसति । उटजे सः कुक्कुटं, श्वानं, धेनुं बलीवर्दौ च पालयति । प्रभाते कुक्कुटः शब्दं करोति कृषकं च जागरयति । सारमेयः तस्य उटजं चोरेभ्यः रक्षति । धेनुः तस्मै तत्कुटुम्बाय च दुग्धं ददाति । बलीवर्दौ क्षेत्रे हलं कर्षतः तस्य साहाय्यं च कुरुतः । एवं सः कुटुम्बेन सह जन्तून् अपि पालयति ।

कृषकः धान्येन सह कदलीपादपं, नारिकेलवृक्षम्, पूगवृक्षं पुष्पाणि च वर्धयति । कदलीपत्रं भोजनार्थम् कदलीफलं च देवाय उपयुज्यते । नारिकेलफलं देवाय, नारिकेलतैलं शिरसे च उपयुज्यते । पूगफलं ताम्बूले उपयुज्यते । नाना पुष्पाणि देवपूजायै स्त्रीणां सौन्दर्यवर्धनार्थं मूर्ध्नि च धार्यते । एवं कृषकः स्वकार्येण सर्वान् अपि जनान् उपकरोति ।

केन विना मानवः न जीवति ?

1. मित्रेण
2. धनेन
3. वृक्षेण
4. अन्नेन

Correct Answer :-

. अन्नेन

---

25) क्+आ+र्+य्+अ+क्+ष्+ए+त्+र्+अ+म् अस्य शुद्धं वर्णसंयोजनमस्ति-

1. कार्यक्षेत्रम्
2. क्रार्यक्षेत्रम्

3. कायाक्षेत्रम्

4. कारयशेत्रम्

Correct Answer :-

- कार्यक्षेत्रम्

26) अभिषेकनाटकं ____ आधारितम् |

1. महाभारतम्

2. रामायणम्

3. भागवतम्

4. बृहत्कथा

Correct Answer :-

- रामायणम्

27) नागानन्दस्य नायक: क: ?

1. जीमूतवाहन:

2. मित्रावसु:

3. वत्सराज:

4. शंखचूड:

Correct Answer :-

- जीमूतवाहन:

28) प्रहसनरूपकस्य प्रधानरस: क: ?

1. रौद्र:

2. वीर:

3. शृङ्गार:

4. हास्यम्

Correct Answer :-

. हास्यम्

29)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहव: स तु जीवति |
काकोऽपि किं न कुरूते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ||

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपु: पृथिव्याम् |
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ||

काकः अनया स्वोदरं पूरयति ।

1. चञ्च्वा
2. मृत्तिकया
3. नाड्या
4. दयया

Correct Answer :-

. चञ्च्वा

30)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अन्नेन विना मानवः न जीवति । अन्नं तु कृषकस्य परिश्रमात् सूर्यवृष्टिमृदां कारणादुत्पद्यते । कृषकः अहर्निशं क्षेत्रे धान्यार्थं परिश्रमं करोति । सः आतपवृष्ट्यादीन् कष्टान् अविगणय्य लोकाय आहारम् उत्पादयति । सः तपस्वीव एकाग्रतया सन्तोषेण च स्वकार्यं करोति ।

सामान्यतः कृषकः उटजे वसति । तत्र सः स्वभार्यापुत्रैः सह निवसति । उटजे सः कुक्कुटं, श्वानं, धेनुं बलीवर्दौ च पालयति । प्रभाते कुक्कुटः शब्दं करोति कृषकं च जागरयति । सारमेयः तस्य उटजं चोरेभ्यः रक्षति । धेनुः तस्मै तत्कुटुम्बाय च दुग्धं ददाति । बलीवर्दौ क्षेत्रे हलं कर्षतः तस्य साहाय्यं च कुरुतः । एवं सः कुटुम्बेन सह जन्तून् अपि पालयति ।

कृषकः धान्येन सह कदलीपादपं, नारिकेलवृक्षम्, पूगवृक्षं पुष्पाणि च वर्धयति । कदलीपत्रं भोजनार्थम् कदलीफलं च देवाय उपयुज्यते । नारिकेलफलं देवाय, नारिकेलतैलं शिरसे च उपयुज्यते । पूगफलं ताम्बूले उपयुज्यते । नाना पुष्पाणि देवपूजायै स्त्रीणां सौन्दर्यवर्धनार्थं मूर्ध्नि च धार्यते । एवं कृषकः स्वकार्येण सर्वान् अपि जनान् उपकरोति ।

कृषकः कुत्र वसति ?

1. उटजे
2. भवने
3. वृक्षे
4. मन्दिरे

Correct Answer :-

. उटजे

Topic:- Sanskrit (SAN)

1) अशुद्धं क्रियापदं चिनुत –

1. पचेयाताम् ।
2. रमेयाताम् ।

3. पठेयाताम् ।

4. लभेयाताम् ।

Correct Answer :-

. पठेयाताम् ।

---

2) भिन्नप्रकृतिकपदं चिनुत-

1. हर्षचरितम् ।

2. सौन्दरनन्दम् ।

3. नैषधीयचरितम् ।

4. बुद्धचरितम् ।

Correct Answer :-

. हर्षचरितम् ।

---

3) भारतीयदर्शनेषु आस्तिकदर्शनानि कति ?

1. 8

2. 10

3. 6

4. 4

Correct Answer :-

. 6

---

4) _____पदार्थप्रधानः द्वन्द्वः ।

1. उभय ।

2. उत्तर ।

3. पूर्व ।

4. अन्य ।

Correct Answer :-

. उभय ।

5) पाणिनेः व्याकरणस्य भाष्यकारः कः ?

1. वररुचिः ।
2. भर्तृहरिः ।
3. पतञ्जलिः ।
4. यास्कः ।

Correct Answer :-

. पतञ्जलिः ।

6) 'तिष्ठन्त्याः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः कः ?

1. शतृ ।
2. क्तवतु ।
3. क्त ।
4. शानच् ।

Correct Answer :-

. शतृ ।

7) वेदाङ्गानि कति ?

1. 6
2. 4
3. 3
4. 5

Correct Answer :-

. 6

8)

अयम् आस्तिकदार्शनिकः नैव -

1. चार्वाकः ।
2. कणादः ।
3. कपिलः ।
4. गौतमः ।

Correct Answer :-

. चार्वाकः ।

---

9) 'आदिष्टः' इत्यत्र प्रत्ययः कः ?

1. क्त ।
2. क्तवतु ।
3. शतृ ।
4. क्त्वा ।

Correct Answer :-

. क्त ।

---

10) 'ऊढरथः' इत्यस्य विग्रहवाक्यं किम् ?

1. ऊढः रथः यस्य सः ।
2. ऊढः रथः यस्मै सः ।
3. ऊढः रथः यस्मात् सः ।
4. ऊढः रथः येन सः ।

Correct Answer :-

. ऊढः रथः येन सः ।

---

11) 'नक्षत्रैः प्रकाश्यते ।' इत्यत्र वाक्यप्रयोगः कः ?

1. कर्मणि ।
2. कर्तरि ।

3. कर्तृकर्मणि ।

4. भावे ।

Correct Answer :-

. भावे ।

---

12) नैषधीयचरिते कति सर्गाः समुपलभ्यन्ते ?

1. 20

2. 22

3. 18

4. 15

Correct Answer :-

. 22

---

13) रेखीयाभिक्रमः अनेनापि व्यवह्रियते ?

1. व्यवहारनिबन्धनसिद्धान्तः

2. लिखितपरीक्षा

3. मानदण्डपरीक्षा

4. अन्तर्नियन्त्रिताभिक्रमः

Correct Answer :-

. व्यवहारनिबन्धनसिद्धान्तः

---

14) पाणिनि-प्रणीते शब्दानुशासने कति अध्यायाः समुपलभ्यन्ते ?

1. 6

2. 8

3. 9

4. 10

Correct Answer :-

. 8

15) 'गृहीतवान्' इत्यस्य प्रत्ययः कः ?

1. क्तवतु ।
2. क्त ।
3. शानच् ।
4. शतृ ।

Correct Answer :-

. क्तवतु ।

16) विलियम् -वुण्ट-महोदयः अस्य सिद्धान्तस्य प्रवर्तकः –

1. जीवनवृत्तविधेः
2. अन्तर्दर्शनविधेः
3. प्रयोगात्मकविधेः
4. बहिर्दर्शनविधेः

Correct Answer :-

. प्रयोगात्मकविधेः

17) 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' इति कस्य मतम् ?

1. चार्वाकस्य ।
2. बौद्धस्य ।
3. नैय्यायिकस्य ।
4. जैनस्य ।

Correct Answer :-

. चार्वाकस्य ।

18)

नाट्यशास्त्रं केन विरचितम् ?

1. भरतमुनिना ।

2. भासेन ।

3. व्याससमुनिना ।

4. भवभूतिना ।

Correct Answer :-

- भरतमुनिना ।

19) 'पञ्चमवेदः' इति प्रसिद्धम् इदं काव्यम्-

1. श्रीमद्महाभारतम् ।

2. उपनिषदः ।

3. श्रीमद्रामायणम् ।

4. पुराणानि ।

Correct Answer :-

- श्रीमद्महाभारतम् ।

20) बिनेमहोदयस्य मूलदेशः कः?

1. रूस्

2. अमेरिका

3. फ्रांस्

4. जर्मनी

Correct Answer :-

- फ्रांस्

21) 'नागेषु गोषु तुरगेषु तथा नरेषु' इत्यस्मिन् वाक्ये 'नागेषु' इति पदं कम् सूचयति ?

1. सर्पम् ।

2. अश्वम् ।

3. गजम् ।

4. गन्धर्वम् ।

Correct Answer :-

- गजम् ।

22) 'ईदृक्' इति शब्दस्य अर्थः कः ?

1. तादृशः ।

2. सुदृष्टिः ।

3. एतादृशः ।

4. दूरदृष्टिः ।

Correct Answer :-

- एतादृशः ।

23) शिक्षणस्य मुख्योद्देश्यं वर्तते -

1. ज्ञानप्रदानम्

2. पाठ्यक्रमपूरणम्

3. वेतनप्राप्तिः

4. समययापनम्

Correct Answer :-

- ज्ञानप्रदानम्

24) पञ्चभूतेषु अयं न भवति -

1. वायुः ।

2. तेजः ।

3. आत्मा ।

4. पृथ्वी ।

Correct Answer :-

. आत्मा ।

---

25) अत्र बालकस्य स्थानं मुख्यं तथा शिक्षकस्य स्थानं गौणं वर्तते -

1. आदर्शवादे

2. प्रकृतिवादे

3. यथार्थवादे

4. प्रयोजनवादे

Correct Answer :-

. प्रकृतिवादे

---

26) वेदपुरुषस्य पादरूपेण कः/किम् उपमीयते ?

1. छन्दस् ।

2. कल्पः ।

3. निरुक्तम् ।

4. ज्योतिष् ।

Correct Answer :-

. छन्दस् ।

---

27) छात्रेभ्यः बेसिक-शिक्षा प्रदेया इति केन उक्तम् ?

1. राधाकृष्णन् महोदयेन

2. महात्मागान्धि

3. रविन्द्रनाथ-ठागोरेण

4. विवेकानन्देन

Correct Answer :-

. महात्मागान्धि

28) शङ्कराचार्यमतानुसारम् अविद्या नाम किम्?

1. ईश्वरः
2. ब्रह्मा
3. माया
4. जीवः

Correct Answer :-

. माया

29) साधु वाक्यं किम् ?

1. मन्दिरस्य परितः भिक्षुकाः सन्ति ।
2. मन्दिरं परितः भिक्षुकाः सन्ति ।
3. मन्दिरात् परितः भिक्षुकाः सन्ति ।
4. मन्दिरे परितः भिक्षुकाः सन्ति ।

Correct Answer :-

. मन्दिरं परितः भिक्षुकाः सन्ति ।

30) शिक्षायाः मुख्याङ्गं वर्तते-

1. शिक्षकः
2. छात्रः
3. पुस्तकम्
4. विद्यालयः

Correct Answer :-

. छात्रः

31)

'मुद्राराक्षसम्' इति नाटकस्य प्रणेता कः ?

1. विशाखदत्तः ।
2. भासः ।
3. भवभूतिः ।
4. अश्वघोषः ।

Correct Answer :-

. विशाखदत्तः ।

---

32) 'उद्धरति' इति क्रियापदस्य धातुः कः ?

1. द्धर ।
2. धर् ।
3. हा ।
4. धृञ् ।

Correct Answer :-

. धृञ् ।

---

33) बौद्धदर्शनस्य शून्यवादी-सम्प्रदायः किं मतमनुसरति?

1. हीनयानम्
2. हंसयानम्
3. देवयानम्
4. रथयानम्

Correct Answer :-

. हीनयानम्

---

34) कक्षायां प्रवेशसमये अध्यापकानां स्वभावः भवेत् –

1. विचारग्रस्तः

2. प्रसन्नः

3. दुःखी

4. गम्भीरः

Correct Answer :-

- प्रसन्नः

---

35) '_____ रसज्ञानाम् आहारोऽपि न रोचते।'

1. रत्नावली।

2. शाकुन्तलम्।

3. वासवदत्ता।

4. कादम्बरी।

Correct Answer :-

- कादम्बरी।

---

36) 'नीलमेघः' इत्यस्य विग्रहवाक्यं किम्?

1. नीलः इव मेघः।

2. नीलो मेघः।

3. नलः मेघः इव।

4. नीलः मेघः इव।

Correct Answer :-

- नीलो मेघः।

---

37) पावलाव् महोदयेन शास्त्रीयानुबन्धस्य प्रयोगः सर्वप्रथमं परीक्षणं कस्मिन् कृतम्?

1. शुनके

2. बिडाले

3. कपोते

4. मूषके

Correct Answer :-

. शुनके

38) वृद्धिरादैच् संज्ञाविधायकसूत्रं किम् ?

1. अपृक्तः ।

2. गतिश्च ।

3. आदैच् ।

4. अचोऽन्त्यादि ।

Correct Answer :-

. आदैच् ।

39) 'अजन्तः' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः कः ?

1. अच् + अन्तः ।

2. अज + न्तः ।

3. अज + अन्तः ।

4. अज् + अन्तः ।

Correct Answer :-

. अच् + अन्तः ।

40) वेदत्रयी अस्ति -

1. सामवेदः - अथर्ववेदः - यजुर्वेदः ।

2. ऋग्वेदः - शुक्लयजुर्वेदः - सामवेदः ।

3. ऋग्वेदः - सामवेदः - अथर्ववेदः ।

4. ऋग्वेदः - यजुर्वेदः - सामवेदः ।

Correct Answer :-

- ऋग्वेदः - यजुर्वेदः - सामवेदः ।

41) 'पुरुषसिंहः' इत्यत्र समासः कः ?

1. द्वन्द्वः ।
2. कर्मधारयः ।
3. बहुव्रीहिः ।
4. तत्पुरुषः ।

Correct Answer :-

- कर्मधारयः ।

42) "एडूकेशनल साइकॉलजी" इति पुस्तकं केन लिखितम् ?

1. टाइडमैनवर्येण
2. सिगमण्ड् –फ्रॉयडवर्येण
3. थारण्डाइकवर्येण
4. स्पीयरमैनवर्येण

Correct Answer :-

- थारण्डाइकवर्येण

43) साधु वाक्यं किम् ?

1. छात्रैः विद्यालयं गम्यते ।
2. छात्रेः विद्यालयाः गम्यते ।
3. छात्रैः विद्यालयः गम्यते ।
4. छात्रैः विद्यालयः गम्यन्ते ।

Correct Answer :-

. छात्रैः विद्यालयः गम्यते ।

44) विघ्नभयेन कैः न प्रारभ्यते ?

1. मध्यमैः ।
2. नीचैः ।
3. मूर्खैः ।
4. उत्तमैः ।

Correct Answer :-

. नीचैः ।

45) स्वयमन्वेषणविधेः नामान्तरं वर्तते?

1. समीक्षणविधिः
2. समूहचर्चा विधिः
3. परियोजना विधिः
4. ह्यूरिस्टिकविधिः

Correct Answer :-

. ह्यूरिस्टिकविधिः

46) किरातार्जुनीये कति सर्गाः सन्ति ?

1. 22
2. 18
3. 14
4. 20

Correct Answer :-

. 18

47)

ऋग्वेदस्य ऋत्विक् कः अस्ति ?

1. उद्गाता ।
2. होता ।
3. ब्रह्मा ।
4. अध्वर्यु ।

Correct Answer :-

. होता ।

---

48) 'वाङ्मूलम्' इत्यत्र सन्धिः कः ?

1. जश्त्वसन्धिः ।
2. अनुनासिकसन्धिः ।
3. श्चुत्वसन्धिः ।
4. ष्टुत्वसन्धिः ।

Correct Answer :-

. अनुनासिकसन्धिः ।

---

49) इदं भवभूतेः काव्यम् -

1. मालविकाग्निमित्रम् ।
2. स्वप्नवासवदत्तम् ।
3. मालतीमाधवम् ।
4. मुद्राराक्षसम् ।

Correct Answer :-

. मालतीमाधवम् ।

---

50) विवेकानन्दस्य मते विद्यायाः मुख्योद्देश्यं वर्तते?

1. आत्मविकासः

2. आत्मशिक्षा

3. शारीरिकविकासः

4. चारित्र्यकविकासः

Correct Answer :-

. चारित्र्यकविकासः

---

51) 'घोटकः' इत्यस्य पर्यायपदं किम् ?

1. गजः ।

2. सर्पः ।

3. अश्वः ।

4. खरः ।

Correct Answer :-

. अश्वः ।

---

52) इदं साङ्ख्यदर्शनस्य अभिमतम् -

1. आरम्भवादः ।

2. सत्कार्यवादः ।

3. विवर्त्तवादः ।

4. असत्कार्यवादः ।

Correct Answer :-

. सत्कार्यवादः ।

---

53) 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।' के ते गुणाः ?

1. रीतिः - गुणाः - रसाः ।

2. उपमा - अर्थगौरवम् - पदलालित्यम् ।

3. उपमा - रीतिः - रसाः ।

4. रसाः - अर्थगौरवम् - पदलालित्यम् ।

Correct Answer :-

. उपमा - अर्थगौरवम् - पदलालित्यम् ।

54) पञ्चमहाकाव्यानां प्रसिद्धः व्याख्याकारः कः ?

1. सायणाचार्यः ।

2. यास्कः ।

3. मल्लिनाथः ।

4. पतञ्जलिः ।

Correct Answer :-

. मल्लिनाथः ।

55) निरुक्तस्य विषयः कः ?

1. व्युत्पत्तिः ।

2. निर्वचनम् ।

3. सन्धिः ।

4. व्याख्यानम् ।

Correct Answer :-

. निर्वचनम् ।

56) 'पादपः' इत्यत्र समासः कः ?

1. कर्मधारयः ।

2. बहुव्रीहिः ।

3. तत्पुरुषः ।

4. उपपदसमासः ।

Correct Answer :-

. उपपदसमासः ।

57) इदं पञ्चमहाकाव्येषु न अन्तर्भवति -

1. विक्रमोर्वशीयम् ।
2. नैषधीयचरितम् ।
3. शिशुपालवधम् ।
4. किरातार्जुनीयम् ।

Correct Answer :-

. विक्रमोर्वशीयम् ।

58) शिक्षणप्रक्रियायां छात्रः भवति –

1. आश्रितचरः
2. स्वतन्त्रचरः
3. मध्यस्थचरः
4. मूर्तचरः

Correct Answer :-

. आश्रितचरः

59) 'चन्द्रापीडः' कस्य/कस्याः काव्यस्य नायकः ?

1. हर्षचरितस्य ।
2. वासवदत्तस्य ।
3. कादम्बर्याः ।
4. नैषधीयचरितस्य ।

Correct Answer :-

. कादम्बर्याः ।

60)

लौकिकव्याकरणे लकाराः कति ?

1. 8
2. 9
3. 5
4. 10

Correct Answer :-

- 10